ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
UGC APPROVAL NO. - 42652
Received on 2ndApril 2018, Revised on 4th April 2018; Accepted 5thApril 2018
आलेख

अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी विद्यार्थी और शिक्षा जगत

* Dr.राहुल कुमार
(M.Sc, M.Ed, M.Phil, JRF-NET, SET(Education), SET (Botany), Ph.D.
Indianrahulkumar@gmail.com

Key words: Introvert(अन्तर्मुखी),बहिर्मुखी (Extrovert),मिथ्याधारणा (Sterotype),नकारात्मक धारणाऐ व शिक्षातंत्र ।

सारांश (एब्स्ट्रेक्ट)

प्रस्तुत शीध पत्र (रिसर्च पेपर)मे अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी विद्यार्थियो के लक्षण प्ररूप (Trait)अन्तर्क्रिया विभेदन को (Interactive Differentiation) ऐतिहासिक विवेचन के साथ वैदिक कालीन अन्तर्दर्शन (Introspecation)विधि द्वारा चराचर का जानने की प्रकिया का, वर्तमान के बहिर्मुखी जगत की और खिसकाव को स्पष्ट करतें हुऐ शिक्षा तंत्र मे मुख्य रूप से अन्तर्मुखी विद्यार्थियो के सकारात्मक पक्ष को समझाने का प्रयास किया जायेगा,जो अध्यापको को अन्तर्मुखता की प्रवृति वाले विद्यार्थियों के प्रति स्टीरियोटाइप होने से रोकेगा और शिक्षातंत्र की गत्यात्मकता (Dynamacity)मे त्वरण (एक्सीलरेशन) उत्पन्न करेगा। यह अध्ययन शैक्षिक समाज हेतु एक नयी दिशा प्रदान करेगा क्योकि हमारे स्कूल तंत्र मे अन्तर्मुखी के बारे में नकारात्मक धारणाऐ है, जिनको वास्तविक शैक्षिणिक परिस्थितियो मे अध्यापक आकलित करके सकारात्क शिक्षण करा पायेगा।

अनुसंधान पेपर का परिचय : सन्दर्भ और समस्या (प्रस्तावना)

आज के वर्तमान युग मे अत्यधिक सामाजिकता का प्रदर्शन करने वाले,उच्च वाणीयुक्त व्यक्तियों को सफलता के सोपान पर तीव्रता से आरोहण करने वालो के रूप में माना जाता है, ओर आने वाले विद्यार्थी राष्ट्र के वयस्क व्यक्ति बनेगे ओर राष्ट निर्माण मे अपनी भूमिका का निर्वाह करेगे।

अतः सम्पूर्ण शिक्षातंत्र विद्यार्थियो की मनोविज्ञानिक भिन्नता की अवहेलना कर समस्त विद्यार्थियों को बातुनी (टाकेटिव), बाहुय उद्दीपनों मे रूचि लेने वाला व कक्षा कक्ष में अतिसक्रिय भागीदारी कराने हेतु तत्पर हो उठा है। और इस प्रक्रिया मे निरीह बालकों को एक भिन्न व्यवहार को अपनाने की ओर धकेला जाता है।

और यह सब सिर्फ ओर सिर्फ सफलता की दर को सामाजिक व अतिसक्रियता के साथ अनुक्रमानुपातिक रूप से समीकरित करने के प्रचार के कारण है।

वर्तमान युग मे सफलता दर <=> सामाजिक सक्रियता

परन्तु वास्तविकता मे आज के भोतिकवादी युग मे इसकी कीमत मासूम विद्यार्थियों को चुकानी होती है। मानोवैज्ञानिक व रासायनिक भिन्नता जिसमें डोपामाइन व एसीटायल कोलीन प्रमुख है,के कारण कुछ विद्यार्थी अत्यधिक बातुनी, सामाजिक (अधिक), रिस्क लेने वाले व बाहय उद्दीपनों (स्टीमुलस) से प्रेरणा प्राप्त करने वाले होते है जबकी कुछ शांत एकांन्त

पसंद व अन्तः जगत से प्रेरणा प्राप्त करने वाले होते है,जिन्हे क्रमशः बहिर्मुखी विद्यार्थी व अन्तर्मुखी विद्यार्थी माना जाता हैभारतीय वैदिक कालीन परिप्रेक्ष्य में बात करे तो अन्तर्दर्शन (इन्टरोस्पेक्सन) विधि से चराचर जगत की शिक्षा प्रदान की जाती थी। जिसमे अन्तर्मुखता एक प्रारंभिक शर्त होती थी। कालान्तर मे भारतवर्ष गुलामी की जंजीरो मे जकड़ गया। भारतीय संसाधनों का दोहन किया गया फलस्वरूप वर्तमान निर्धन भारतवर्ष हमें आजादी के पश्चात प्राप्त हुआ अतः वैष्विक राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में अग्रगामी बनने हेतु उद्योगपतियों,नोकरशाहों व ऐसे नेताओं की आवश्यकता हुई जो येन केन प्रकारेण भारतीय संसाधनो का प्रयोग कर मुनाफा या लाभ कमाये। इस लाभ आधारित व्यवस्था मे ऐसे व्यक्तियो की आवष्यकता महसूस हुई जो उर्जाशील, अन्तर्क्रियाशील, बातुनी व बाह्य जगत की परिस्थितयो मे शीध्रता से तालमेल बैठा पाये ठीक यही प्रक्रिया पश्चिम जगत हुतु सत्य है जिनका पुंजीवादी मोडल रहा है। वहॉ भी बहिर्मुखी गुणो वाले व्यक्तियो की आवश्यकता रही अतः भारतीय समाज मे बहिर्मुखता की प्रवृति का विकास यूरोपीय राष्ट्र के पश्चात हुआ और वहीं सेभौतिकवादी गुणों (बातुनी,उर्जाशील, बाह्यदीपन प्रेरित,पार्टीभोजी जीव) का प्रक्षेपण भारतवर्ष मे प्रांरभ हुआ कालान्तर मे शनैः–शनैः यह बहिर्मुखता की प्रवृति भारतीय जनमानस मे आवश्यकता के कारण उत्पन्न हुई और एक नई दाषनिक विचाधारा (पूंजी प्राप्ति की) का उद्भव समाज मे हुआ। जिसने भारतीय शिक्षा व्यवस्था मे अन्तर्मुखता से बहिर्मुखता की और खिसकाव (Shift) को प्रेरित किया जिसे सफलता व नेतृत्वक्षमता (Leadership) का अधार माना गया। परन्तु मित्रों प्रकृति को मनुष्य की आवश्यकताओं से सरोकार नहीं होता है अतः वह अपनी सबसे सुन्दर कृति''बालक (शिशु)'' मे कोई परिवर्तन नही करती अतः विभिन्न जैविक,शारीरिक,मानसिक व मनोवैज्ञानिक विभिन्नताओ से युक्त शिशु पृथ्वी पर अवतरित होता है। यह शिशु कुछ जन्मजात प्रवृतियों व गुणों के साथ आता है,जिनका हमे सम्मान करना चहिऐ ओर उसमें सामाजिक नैतिक मापदण्डो के अनुसार न्यूनतम परिवर्तन करना चाहिऐ। परन्तु आज शिक्षातंत्र समस्त छात्रों को बहिर्मुखी बनाने हेतु प्रेरित दिखाई देता है और अन्तमुर्खियों को असफलता,अनाकर्शक अकर्मण्य व शक की निगाह से देखता है।यहॉ पर मै अन्तर्मुखी विद्यार्थियों को बहिर्मुखी विद्यार्थीयों पर श्रेष्ठता प्रदान नहीं कर रहा हुॅ अपितु मित्रों आज आवश्यकता है शिक्षा के समानता के सिद्वान्त के आधार बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी दोनो को साथ–साथ अलग–अलग शिक्षण विधियो के आधार पर शिक्षा प्रदान करने की जिससे उनका सर्वार्गीण विकास हो सके और भारतीय समाज को रोचक,सत्यपथ पर प्रेरित व मनोवैज्ञानिक पक्षों के आधार पर विविधता युक्त बनाने मे अपना योगदान मिल सके।

अध्ययन :

''अन्तर्मुखता एक व्यक्तित्व लक्षण (ट्रेट) है जहॉ कोई इस जगत को आन्तरिक रूप से सम्बन्धित करता है''

(पापाड़ोपोलस 1992)

''यहकिसीव्यक्ति की परिवर्तनशील अवस्था है।'' (सेनेचल 2011)

''हम सभी अन्तर्मुखता व बहिर्मुखता के अंश रखतें है परन्तु जुंग के अनुसार आनुवांशिक रूप से हम किसी दूसरे पक्ष से उपर होते है।''

(लेनी 2002)

'बहिर्मुखी समूहचारी, सकारात्क,उत्तेजना खोजने वाले,गर्मजोश,सक्रिय व सकारात्मक संवेग युक्त होते है।''

(सेनेचल 2011)

''अधिक बोलने वाले और अच्छे विचारो मे कोई सहसम्बन्ध नही होता है''

(स्वान और रेन्टफ्रे 2001)

''बहिर्मुखी शीध्रता से लोगो को प्रभावित करते है,जबकि अन्तर्मुखी धीरे–धीरे प्रभावित करते है।

(मेकड़ाउल 2011)

''इन्ट्रोवर्ट के गुण संवेदशीलता, गंभीरता,शर्मीलापन होते है।लोगो के सामने बोलने का भय, एक रोग हो सकता है।''

(बोगल,क्लार्क 2010)

''हमसे से एक तिहाई से आधे लोग (⅓से)) इन्ट्रोवर्ट हाते है इसलिऐ शिक्षण विधि कक्षा में सभी बच्चों के अनुरूप होनी चहिऐ''

(केन 2013)

''एक्सट्रोवर्ट सहगामी कार्य, चलन व प्रेरणा को पंसद करते है जबकि इंन्ट्रोवर्ट लेक्चर,स्वतंत्र प्रोजेक्ट को पंसद करते है(केन 2013)

''इन्ट्रोवर्ट को एकस्ट्रोवर्ट से अलग–अलग प्रकार के निर्देशो की आवश्यकता होती है लेकिन बहुत कम दिये जाते है और इन्ट्रोवर्ट को अधिक सामाजिक बनने की सलाह दी जाती है।'' (ब्रुस 1999)

उद्देश्यः–

इस स्टेडी का उद्देश्य विद्यार्थियो के अन्तर्मुखता व बहिर्मुखता के गुण को अध्यापकगहनता से समझ कर शिक्षा मे सकारात्मक परिवर्तन करेगे।

शोध विधि :–निरीक्षण

1920 मे स्विस मनोविज्ञानिक कार्लजुंग ने मानवो को अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी मे श्रेणित किया परन्तु वास्तविक रूप से प्रत्येक व्यक्ति एक ट्रेट मे होने के स्थान पर **अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी सातत्यता** या **अन्तर्मुखी बहिर्मुखी स्पेक्ट्रम** मे होता है।

''ऐसी कोई चीज नही है जो पूरी तरह से बहिर्मुखी था अर्न्तमुखी है यह राष्ट्रीय एस्लम है ''

(हाल 1977)

स्टीरियोटायप :–

''अधिकांश व्यक्ति शर्म को इन्ट्रोवर्जन के समानार्थक मानते है जो सही नही है। वास्तव मे शर्म एक छोटा हिस्सा है।''(पापाडोपोलस 1992)

''शर्म दोनो (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी मे ही होती है अन्तर्मुखता शर्मीलापन नही है अन्तर्मुखी एक ऐसे वातावरण से सम्बन्धित है जो अत्यधिक उद्दीपक न हो''

(केन बुक Quiet P.N 12)

''शर्मीलापन एक भय है जिसमे सामाजिक परिस्थितयो मे व्यक्ति अकेला और पृथक्कीकृत महसूस करता है।''

(केन 2015)

''**बहुत से इन्ट्रोवर्ट सामाजिकता को पसंद करते है।**'' (कोई, डोज 1982)

''अन्तर्मुखीयों को प्राप्त प्राकृतिक उपहारो मे से एक यह है कि अकेलापन पूर्णता लाता है''

(कुमार राहुल,2017)

"इन्ट्रोवर्ट मे अधिक एकाग्रता, किसी बिन्दु पर गहराई से सोचने की क्षमता होने के बावजूद एक्स्ट्रोवर्ट ऐसे कार्य ग्रहण करते है जिन्हे करने की उनमे योग्यता नही होती।"

(मेकडाउन 2012, P.N 60.63)

शिक्षा तंत्रः–

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अन्तर्मुखी होना कोई बुरी बात नही है और चुंकि एक तिहाई से लेकर आधे विद्यार्थी अन्तर्मुखी होते है अतः उनके प्रति नकारात्मक भावनाऐ नहीं रखनी चहिऐ बलकि शिक्षक को ऐसी शिक्षाविधियों यथा व्यक्तिगत प्रोजेक्ट कार्य,भाषण, एक के साथ एक, सहगामी क्रियाओ आदि से अन्तर्मुखी विद्याथियो का विकास करना चाहिऐ तथा बहिर्मुखी विद्यार्थियों को समुह प्रोजेक्ट, शांत करके व एकाग्रता के वातावरण मे रखने पर जहॉ अन्तर्मुखी विद्यार्थियों में बहिर्मुखी के तत्वों का समावेशन होगा वही बहिर्मुखी मे अन्तर्मुखी का तत्व विकसित होगा जो बालकों के सर्वांगीण विकास मे सहायक होगा ।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

Australian journal of Adult Learning

QUIET 2013: The Power of Introverts in a world that can't stop talking new York

http://tspace.library.utoronto.ca/bistream/1807/68650/1/leung_winnie_f_201506mtrp.pdf

http://search proquest.com.my access.library.utoronto.ca/do/634/30117?accountid

**** Corresponding Author:***
Dr.राहुल कुमार
(M.Sc, M.Ed, M.Phil, JRF-NET, SET(Education), SET (Botany), Ph.D.
Indianrahulkumar@gmail.com